चेले बनानाः संसार की सेवा करो
प्रेरितों के काम

यदि आपके पास बाइबल है, और आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ प्रेरितों के काम 17 निकालें। यहीं से हम शुरू करेंगे। इस साल की शुरूआत में हमने द्रुत गति से प्रेरितों के काम की पुस्तक में से यात्रा शुरू की थी, और आज हम उसके निष्कर्ष पर पहुँच गए हैं। हमने सुसमाचार को 120 लोगों के एक छोटे से समूह से यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया, और अक्षरशः, पृथ्वी की छोर तक पहुँचने के मार्ग पर फैलते हुए देखा है। हमने हजारों–हजार लोगों को उद्धार पाते हुए देखा है। उस समय के ज्ञात संसार भर में हमने कलीसियाओं को बढ़ते हुए देखा है।

क्या यह एक आश्चर्यजनक कहानी नहीं है? हम जो पढ़ते आ रहे हैं वह कोई काल्पनिक कथा नहीं है। यह यथार्थ है। हजारों–हजार लोगों के मसीह के विश्वास में आने की कहानियाँ। कलीसिया ज्ञात संसार में बढ़ रही है, और वास्तव में उत्तेजक बात यह है कि इस कहानी का कोई उपसंहार नहीं है, इसे हमारी कहानी बनना है। यह केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक नहीं है; यह आज की कलीसिया है।

यह भारत की बात है। कुछ सप्ताह पहले मैं ने भारत की कुछ कहानियाँ आपको बताई थी। एक और कहानी मैं आपको सुनाता हूँ। दीपक भारत में एक छोटी घरेलू कलीसिया के पासबान हैं। यह छोटी कलीसिया एक घर में चलती है। वे इसे समझते हैं। उन सबको पता है कि उन्हें चेले बनाने हैं। अतः, वे चेले बनाना शुरू करते हैं, और अब यह एक कलीसिया बढ़कर 93 अलग–अलग कलीसियाओं का रूप ले चुकी है।

इस बीच, इन नए चेले बनाने वालों में से एक व्यक्ति एक ऐसे गाँव में जाता है जहाँ कोई सुसमाचार या कोई कलीसिया नहीं है। वह इस गाँव में जाता है और कुएँ पर कान्ति नामक एक महिला से मिलता है। यह यूहन्ना 4 है। यह स्त्री कुएँ पर है और वह मुसहरा जाति की है। मुसहरा जाति के बारे में थोड़ी जानकारी देना चाहता हूँ। मुसहरा एक अछूत जाति है। भारत में सबसे नीची जाति के लोगों के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया जाता है। कोई इनके पास नहीं जाता है, इन्हें छूता भी नहीं है। मुसहरा जाति में जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही दास होता है। जन्म के दिन से ही वह एक ऐसे स्वामी की संपत्ति होता है जो उससे शौचालय की सफाई जैसे कार्य करवाता है। मुसहरा जाति के लोगों को अपने स्वामियों के साथ उनके गाँव में रहने की अनुमति भी नहीं है। वे एक अलग गाँव में अपनी ही जाति के बीच रहते हैं ताकि उनके स्वामियों को उन्हें छूने की जरूरत न पड़े।

अतः, मुसहरा जाति की स्त्री, कान्ति कुएँ से पानी भर रही है। इन चेले बनाने वालों में से, मसीह के अनुयायियों में से एक उसके पास आता है और उसे सुसमाचार सुनाता है। वह मसीह पर विश्वास करती है, सुसमाचार को ग्रहण करती है, और उद्धार पाती है। वह अपने गाँव में जाती है, जो केवल मुसहरा जाति के लिए है। वह सुसमाचार सुनाती है। 70 लोग उसकी बात को सुनते हैं; वे सारे के सारे 70 लोग विश्वास करते हैं। उनमें से हर कोई जो परिपक्व और विश्वास करने में सक्षम है, वह मसीह पर विश्वास करता है।

कहानी यहीं खत्म नहीं होती है। उनका स्वामी मुसहरा जाति के इस 70 लोगों के समूह को एक बड़े कार्य को करने के लिए किसी दूसरे स्थान पर भेजने का निर्णय लेता है, जहाँ 190 मुसहरा हैं तथा उन्हें और अधिक की जरूरत है। अतः, स्वामी इन लोगों को 190 लोगों के समूह के पास भेजता है। उनमें से किसी ने कभी सुसमाचार नहीं सुना है। अतः, ये 70 लोग वहाँ पहुँचते हैं और सुसमाचार सुनाना शुरू करते हैं, और वे 190 लोग मसीह पर विश्वास करते हैं।

यह सुसमाचार अच्छा है। यह प्रेरितों के काम की पुस्तक में अच्छा था, और आज भी अच्छा है। प्रेरितों के काम की कहानी आज की कहानी है। मैं इसे पढ़ता हूँ और मैं भारत की ओर देखता हूँ और एक सवाल मेरे मन में आता है, "क्या यह हमारे बीच भी हो सकता है?" मैं उसे हमारे बीच में होते हुए देखना चाहता हूँ।

मैं यह करना चाहता हूँ। जब हम इस तस्वीर को उपसंहार की ओर लाते हैं तो मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूँ कि मैं जो बताने जा रहा हूँ उसके कारण उत्तरों की बजाय सवाल अधिक खड़े हो सकते हैं। परमेश्वर ने हमारे बीच में इसी तरह से कार्य किया है, विशेषतः पिछले चार या पाँच वर्षों में। वास्तव में हमने वह करना शुरू नहीं किया था जो अन्त में हम कर बैठे। वचन ने उस कार्य को हमारे बीच में किया है। जब हमने वचन का अध्ययन किया तब परमेश्वर ने अपना कार्य पूरा किया।

हमने कभी भी यह नहीं कहा था कि, "हम अनाथों की देखभाल के लिए बड़े स्तर पर पहल करेंगे।" इसके विपरीत, हमने याकूब का अध्ययन किया, और याकूब ने कहा, "तुम्हें अनाथों की देखभाल करनी है," और उसी के कारण वह सब हुआ जिसे आज हम हमारे पूरे शहर में अनाथों की देखभाल के संबंध में होते हुए देखते हैं। शुरूआत में कभी भी हमने ऐसा नहीं कहा था कि, "चलो हम एक निर्णायक अभियान शुरू करेंगे। और यह बहुत अच्छा रहेगा।" नहीं, हमने केवल वचन का अध्ययन किया, और हमारी यह यात्रा जो हम कर रहे हैं, वह हमारे बीच में उस वचन का फल है।

मुझे महसूस हुआ कि इस वर्ष के आरम्भिक महीनों में प्रभु इस प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन करने के लिए हमें प्रेरणा दे रहा है ताकि वह आने वाले दिनों में जो होने वाला है उसके लिए आधार तैयार कर सके, लेकिन मैं नहीं जानता कि वह क्या है। मैं इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि आप यह सोचें कि यह फँसाने के लिए चारे के समान है; मेरे मन में कोई योजना है जिसे मैं बाद में बताऊँगा, और मैं आप सब को बना रहा हूँ।

कलीसिया जो संसार को उलट–पुलट कर देती है

प्रेरितों के काम की पुस्तक में बिताए गए हमारे समय के आधार पर मैं आपको तीन आधारभूत निष्कर्ष बताना चाहता हूँ और चाहता हूँ कि हम एक साथ मिलकर प्रभु से प्रार्थना करें और कहें, "आगे बढ़ने वाली एक कलीसिया के रूप में इसका हम पर क्या असर पड़ेगा?" मेरे विचार से संभावना विशाल है, परन्तु मैं आपके सामने उन आधारों को इस शीर्षक के अन्तर्गत रखना चाहता हूँ, "उस कलीसिया के बारे में सोचते हुए जो संसार को उलट–पुलट कर देती है।" सुनते ही, यह आपको आदर्शवादी लगता है। मैं जानता हूँ। मैं जानता हूँ आप में से कुछ लोग अपनी आँखें मटका रहे हैं, "संसार को उलट–पुलट करने वाली कलीसिया।" यह आदर्शवादी नहीं है। मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि यह आदर्शवादी क्यों नहीं है।

इसे हम इस प्रकार करेंगे। प्रेरितों के काम की पुस्तक को समाप्त करते समय हम एक कलीसिया पर निशाना साधेंगे, थिस्सलुनीके की कलीसिया। मेरे विचार से यह कलीसिया उन बातों का जिनके बारे में हम

पिछले चार सप्ताहों से बात कर रहे हैं, विशेषतः चेले बनाने से संबंधित बातों और उस सम्पूर्ण तस्वीर का जिसे हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देख रहे हैं, सर्वाधिक स्पष्टता से चित्रण करती है, उदाहरण दिखाती है, और प्रदर्शन करती है। मैं चाहता हूँ कि हम इस कलीसिया पर ध्यान दें।

मैं चाहता हूँ हम प्रेरितों के काम 17:1–9 पढ़ें, जो हमें याद दिलाता है कि थिस्सलुनीकियों की कलीसिया कैसे शुरू हुई थी, और फिर हम 1 थिस्सलुनीकियों 1 में जाएँगे और हम उसे पढ़ेंगे जो पौलुस ने इस कलीसिया को लिखा है। इससे हमें अधिक गहराई से यह झलक मिलेगी कि प्रेरितों के काम 17:1–9 में क्या हो रहा था, और प्रेरितों के काम 17:1–9 के फलस्वरूप क्या हुआ। मैं चाहता हूँ आप यथार्थ की एक वास्तविक तस्वीर को देखें जिसने संसार को उलट–पुलट कर दिया था।

प्रेरितों के काम 17:1, कलीसिया की शुरूआत इस प्रकार हुई थी।

> *फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था। और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उनके साथ विवाद किया। और उनका अर्थ खोल–खोलकर समझाता था, कि मसीह का दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था; और यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है। उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों ने और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए। परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर बाजारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। और उन्हें न पाकर, वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कितने और भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए, कि ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा–पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आए हैं। और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ उतारा है, और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं। उन्होंने लोगों को और नगर के हाकिमों को यह सुनाकर घबरा दिया। और उन्होंने यासोन और बाकी लोगों से मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया।*

इस प्रकार कलीसिया की शुरूआत हुई। अब, नये नियम में इस कलीसिया को लिखी पौलुस की पहली पत्री 1 थिस्सलुनीकियों को निकालें। पौलुस लम्बे समय तक थिस्सलुनीके में नहीं रूकता है। वह आगे बढ़ जाता है, और फिर थिस्सलुनीके की कलीसिया को देखने के लिए तिमुथियुस को भेजता है। तिमुथियुस जाता है, उन्हें देखता है, उनके साथ समय बिताता है, और वापस आकर पौलुस को उनके हाल–चाल बताता है। हाल–चाल जानने के बाद, पौलुस यह पत्र उन्हें लिखता है। मैं चाहता हूँ कि हम पत्री को पढ़ें। तिमुथियुस और सीलास के साथ, पौलुस इस पत्री को थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को लिखता है, और मैं चाहता हूँ कि हमने अभी प्रेरितों के काम 17 में जो पढ़ा है उसकी झलक को देखें। फिर, वहाँ जो हो रहा है उसका फल।

दूसरे वचन से देखें। तिमुथियुस और सीलास के साथ, पौलुस थिस्सलुनीके की कलीसिया को लिखता है,

> *हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सबके विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा के धीरज को लगातार स्मरण करते हैं। और हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगो, हम जानते हैं कि तुम चुने हुए हो। क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन् सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिए तुम में कैसे*

बन गए थे। और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। यहाँ तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिए तुम आदर्श बने। क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम क्योंकर मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।

थिस्सलुनीकियों की कलीसिया की इस तस्वीर के आधार पर, मैं कलीसिया के रूप में हमारे सामने तीन आधारभूत यथार्थों को रखना चाहता हूँ। प्रेरितों के काम की पुस्तक की हमारी यात्रा के अन्त में मैं उनको आपके साथ छोड़ना चाहता हूँ, और मेरी प्रार्थना है कि वे हमें न छोड़ें, ये आधारभूत यथार्थ में प्रेरित करें।

हमारा अस्तित्व परमेश्वर की महिमा करने के लिए है।

पहला यथार्थ, कलीसिया के रूप में, हमारा अस्तित्व परमेश्वर की महिमा के लिए है। हम यहाँ अपने लिए नहीं हैं। हम यहाँ एक राजा के लिए, और एक राज्य की बढ़ोतरी के लिए हैं। यही हमारे अस्तित्व का केन्द्र है। इसी एक बात के लिए हम साँस लेते हैं, परमेश्वर की महिमा के लिए। मैं यहाँ 1 थिस्सलुनीकियों 1 में रूकना चाहता हूँ, और आप मेरे साथ बने रहें। हम इसमें से कुछ जगहों पर बहुत तेजी से आगे बढ़ेंगे, परन्तु मैं चाहता हूँ हम इस बात को देखें कि परमेश्वर की महिमा के लिए हमारे अन्दर साँस का होना क्यों एक अच्छी बात है, क्योंकि, पहला, सुसमाचार हमारा आधार है। थिस्सलुनीके में किया गया प्रचार यही था। प्रेरितों के काम 17:3, "यीशु जो मरा, जो मृतकों में से जी उठा, वही मसीह है।" यही पौलुस का सन्देश, सुसमाचार था; कि यीशु हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा। वह पापों पर जयवन्त होकर कब्र में से जी उठा है। वही ख्रिस्त, मसीह और राजा है। उन पर यही कहने का आरोप था कि, "एक और राजा है।" हाँ, एक और राजा है। उसका नाम है, यीशु।

यहाँ 1 थिस्सलुनीकियों के शुरूआती वचनों में पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया में सुसमाचार के प्रयोग को आश्चर्यजनक और खूबसूरत रीति से याद करता है। इसे सुनें, क्योंकि वह उनसे जो कह रहा है वह हम पर लागू होता है। हमें पिता ने चुना है। पद 4 में पौलुस उनसे कहता है, *"और हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगो, हम जानते हैं कि तुम चुने हुए हो। क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन् सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है।"* उसने तुम्हें चुना है। मैं यहाँ किसी धर्मविज्ञानी विचार को बढ़ावा नहीं दे रहा हूँ, केवल बाइबल के एक पद को पढ़ने का प्रयास कर रहा हूँ।

पौलुस इन लोगों से कहता है, "यह स्पष्ट है कि ब्रह्माण्ड के परमेश्वर ने अपना अनुग्रह तुम पर उण्डेला है।" मैं हमसे, मसीह के प्रत्येक अनुयायी से यह सोचने के लिए कहूँगा कि ब्रह्माण्ड का परमेश्वर कैसे अनुग्रहकारी पहल करके आपके जीवन तक पहुँचा, आपको नाम लेकर बुलाया, इसलिए नहीं कि आपका विवरण बहुत चमकदार और आकर्षक था।

आपके विवरण में हर एक बात चिल्ला रही है, "मुझे मत चुनो।" आपके विवरण में सब कुछ चिल्ला–चिल्लाकर कह रहा है, "मैं तुम्हें नहीं चुन रहा हूँ, मैं तुम्हें नहीं चाहता। मैं तुम से भागना चाहता हूँ।" परमेश्वर अपनी करूणा में, नीचे आता है और कहता है, "तुम मेरे हो।" मसीह के अनुयायियों, तुम्हें, हमें, पिता ने चुना है।

क्या हम यहाँ रूककर अगले कुछ घण्टों तक गीत नहीं गा सकते हैं? हाँ, लेकिन हमें बहुत दूर जाना है, इसलिए हम चलते रहेंगे। दूसरा, हमें पुत्र के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है। यहाँ पर मैं इस बात का संकेत

दे रहा हूँ। प्रेरितों के काम 17 में आपने देखा कि जब उन्होंने सुसमाचार को सुना तो उन्होंने वचन को ग्रहण किया। मेरे विचार से पद 6 में लिखा है, "उन्होंने बहुत अधिक कष्ट के साथ वचन को ग्रहण किया।" थिस्सलुनीके में सताव हो रहा था। थिस्सलुनीके में मसीह को ग्रहण करना आसान नहीं था। उनकी पहचान क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह से थी, और एक अर्थ में, इस कारण उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था, सताया जा रहा था। वे आत्म–सुरक्षा के कारण मसीह के पीछे नहीं चल रहे थे। वे अपने आप का इन्कार करके मसीह के पीछे चल रहे थे।

यही मुख्य बात है। यद्यपि, थिस्सलुनीके की बजाय हमारे शहर में मसीह का अनुयायी बनना कई कारणों से आसान है, लेकिन हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि हमने अपने जीवनों को खो दिया है। अब हम नहीं जीते हैं; मसीह हम में जीता है। हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिए गए हैं। यह आधारभूत है। हम अपने जीवनों की दिशा निर्धारित नहीं करते हैं, और हम कलीसिया की दिशा को निर्धारित नहीं करते हैं। हम पुत्र के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए हैं।

तीसरा, हमें आत्मा द्वारा बदला गया है, *"हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन् सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है।"* हमारे जीवनों में यही हुआ है। उनके जीवनों में और हमारे जीवनों में, परमेश्वर हमारे प्रति अत्यधिक अनुग्रहकारी रहा है। हम अपराध बोध के कारण हर समय चेले बनाने और जातियों के बीच में जाने की बात नहीं करते हैं। इसलिए नहीं कि यह हमारी मजबूरी है, इसलिए हमें करना ही है। हम हर समय इनके बारे में बात करते हैं क्योंकि यह हमारे अन्दर के सुसमाचार के अनुग्रह का बहाव है। जब आपने इस प्रकार की करूणा को पाया है, तो आप चाहते हैं कि संसार को इस प्रकार की करूणा का पता चले। जब आप इस प्रकार के अनुग्रह को पाते हैं तो आप इस प्रकार के अनुग्रह का पृथ्वी की छोर तक प्रचार करना चाहते हैं।

हमें आगे बढ़ाने वाली बात यह है कि सुसमाचार हमारी प्रेरणा है। यदि आप पद 3 को देखते हैं, आप तीन वाक्यांशों को देखते हैं तो थिस्सलुनीकियों में सुसमाचार के फल को दिखाते हैं। यह आपके जीवन में और एक कलीसिया के रूप में हमारे जीवन में सुसमाचार के फल को स्पष्टता से दिखाता है।

अतः, पद 3 को देखें। वह कहता है, "अपने परमेश्वर और पिता के सामने..." वे तीन वाक्यांश ये हैं, "तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम और आशा के धीरज..." पहला है, विश्वास का काम। दूसरा, प्रेम का परिश्रम, और तीसरा, आशा का धीरज। अतः, देखें कि कैसे सुसमाचार उन्हें और हमें प्रेरित कर रहा है। इसमें से कुछ दोहराव है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है। हमारा विश्वास उत्पादक कार्य है। कार्य विश्वास से प्रवाहित होता है। विश्वास कार्य करता है। हम इसे देख चुके हैं। हमने याकूब का अध्ययन किया है। हम देखते हैं कि विश्वास कार्य करता है।

अब, हमें यह ध्यान रखना है कि हम हमेशा इसी यथार्थ की ओर वापस लौटें। हमें कार्य से उद्धार दिया गया है, यानि शरीर के कार्य जिनसे परमेश्वर का आदर नहीं होता है। हमें उस प्रकार के कार्य से उद्धार दिया गया है। हमारा कुछ करना, और हमारा बाइबल पढ़ना, और हमारा प्रार्थना करना, और हमारा आराधना करना, और हमारा सुसमाचार सुनाना, और हमारा संसार के कठिन स्थानों में जाना; यह सब इसलिए नहीं है कि हम परमेश्वर को खुश करने या परमेश्वर के सामने स्वीकार्य बनने की कोशिश कर रहे हैं। वह हो चुका है। हम कुछ नहीं कर सकते हैं। हम मसीह की धार्मिकता पर भरोसा रखते हैं। हमें उस प्रकार के कार्य से उद्धार दिया गया है। वह हमारी धार्मिकता है, और उसने जो किया है, वह मुझे और आप को परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकार्य बनाने के लिए पर्याप्त से भी बढ़कर है। इसलिए, हम परमेश्वर के सामने स्वीकार्य बनने की कोशिश करने के किसी भी प्रकार के कार्य से मुक्त हैं। हम उस प्रकार के कार्य से मुक्त हैं।

परन्तु, इसका मतलब यह नहीं है कि हम निठल्ले बैठे हैं। हम कार्य कर रहे हैं क्योंकि हमें कार्य करने के लिए उद्धार दिया गया है, ऐसा कार्य जो विश्वास से संचालित होता है और उससे परमेश्वर की महिमा होती है। विश्वास कार्य का ईंधन है। हम शरीर के कार्य नहीं चाहते हैं। हम विश्वास के कार्य चाहते हैं।

जब आप इस सुसमाचार पर विश्वास करते हैं; जब आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को इसलिए भेजा कि वह हमें हमसे उद्धार दे, हमें अनन्त दण्ड से उद्धार दे, हमारे पापों के लिए मरे, और उस पर विश्वास करने वाले सब लोगों का हमेशा के लिए परमेश्वर से मेल हो जाए, तो फिर आप अपना जीवन इस बात को संसार में फैलाने के लिए जोश के साथ जीएँगे। हम यहाँ केवल खेल नहीं खेल रहे हैं। यह हमारे लिए केवल एक धार्मिक दिनचर्या नहीं है। हम इस पर विश्वास करते हैं, और इसके कारण परमेश्वर की आराधना, परमेश्वर के लिए साहसी गवाही को उत्पन्न करता है, यही विश्वास द्वारा संचालित कार्य है। अतः, हमारा विश्वास एक उत्पादक कार्य है।

हमारा प्रेम परिश्रम को उत्पन्न करता है। प्रेम आधार है। परमेश्वर के प्रति प्रेम, पड़ोसी के लिए प्रेम, एक–दूसरे के लिए प्रेम, और शत्रुओं के लिए प्रेम। हमारे बीच में से कुछ लोग खतरनाक जगहों पर क्यों गए हैं? हमारे बीच में से कुछ लोग संसार के ऐसे स्थानों पर रहने के लिए क्यों गए हैं, जो एक मसीही के लिए खतरनाक है? क्यों? प्रेम के कारण। प्रेम ही वह आधार है जो इस प्रकार के परिश्रम को उत्पन्न करता है। यह आसान नहीं है। हमारी आशा स्थिरता को उत्पन्न करती है। यही पौलुस कहता है, आशा की स्थिरता। सुसमाचार ही उसका ईंधन है।

अतः, यह आधार है, प्रेरणा, और सुसमाचार हमारी महत्वाकांक्षा है। किसी भी बात से बढ़कर, हमारे जीवनों से भी बढ़कर, हम चाहते हैं कि यह सुसमाचार पूरे संसार में फैले। हम चाहते हैं कि जो थिस्सलुनीके की कलीसिया के बारे में कहा गया, वह हमारे बारे में कहा जाए, कि हमारे द्वारा वचन हर जगह सुनाई दे। हम सुसमाचार को पूरे संसार में फैलाना चाहते हैं, क्योंकि, दूसरी बात, हम चाहते हैं कि हमारा मुक्तिदाता अपने लोगों के लिए वापस आए। हम जानते हैं कि सारे संसार में इस वचन के फैलने पर उसका आगमन होगा। मत्ती 24:14, हमने इसके बारे में काफी बात की है, *"राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।"* मसीह, हमारा मुक्तिदाता और हमारा राजा वापस आ रहा है, और वह तब आएगा जब वचन सब जातियों में सुनाया जाएगा। इसलिए, हम अपने आपको सारी जातियों में वचन को फैलाने के लिए इसलिए दे रहे हैं, क्योंकि हम हमारे राजा को देखना चाहते हैं। हम उसके आगमन की बाट जोह रहे हैं।

आप 1 थिस्सलुनीकियों को देखें, इस पुस्तक का प्रत्येक अध्याय मसीह के दूसरे आगमन की ओर संकेत देते हुए समाप्त होता है। यह खूबसूरत है। मैं इसे आप को दिखाता हूँ। आप इसे रेखांकित कर सकते हैं, 1 थिस्सलुनीकियों 1 में पद 10 कहता है, *"और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।"* हम एक पुत्र के स्वर्ग से आने की बाट जोह रहे हैं।

आप 1 थिस्सलुनीकियों 2:19 के अन्त में आते हैं, हम इस वचन पर बाद में वापस लौटेंगे, लेकिन 1 थिस्सलुनीकियों 2:19 कहता है, *"प्रभु यीशु के आगमन के समय हमारी आशा, या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है?"* 1 थिस्सलुनीकियों 3 के अन्त में भी, *"ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे, कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें।"*
1 थिस्सलुनीकियों 4, पद 15 से,

क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

यह आश्चर्यजनक है। हम हवा में प्रभु से मिलेंगे और सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इन बातों से एक–दूसरे को प्रोत्साहन दिया करो। ये उत्साहजनक शब्द हैं। वह वापस आ रहा है।

आप 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 पर आएँ, *"शान्ति का परमेश्वर आप ही पूरी रीति से तुम्हें पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे–पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें। तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।"* हम स्वर्ग से एक पुत्र की बाट जोह रहे हैं। 1 थिस्सलुनीकियों 1:10 का वह वचन संभावित अपेक्षा का वर्णन करता है। भाइयो और बहनो, हमारी आँखें आकाश पर हैं, और हम उस दिन के लिए जी रहे हैं जब हम उसके चेहरे को देखेंगे। हम चाहते हैं हमारा मुक्तिदाता अपने लोगों के लिए वापस आए।

अतः, यह सुसमाचार इस आधार, प्रेरणा, महत्वाकांक्षा को आगे बढ़ाता है, और हमारे दिलों में सुसमाचार के कारण, हम जानते हैं कि हमारा अस्तित्व एक ही बात के लिए है। यह सारी बातों से बढ़कर है। हमारा अस्तित्व हमारे परमेश्वर की महिमा के लिए है। हम अपना जीवन यही करने में बिताना चाहते हैं।

हम चेले बनाने के लिए जीते हैं।

इसे हम कैसे करते हैं? यह दूसरे आधार की ओर लाता है। हम चेले बनाने के लिए जीते हैं। पिछले चार सप्ताहों से हम इसी बात पर ध्यान दे रहे हैं, इस यथार्थ पर जिसके बारे में मेरी प्रार्थना है कि यह हमारे मनों और दिलों में व्याप्त हो जाए कि हम दर्शक नहीं हैं, चेले बनाने वालों की संगति हैं।

यह कहना बहुत कठिन है, और मेरे विचार से इस पर विश्वास करना कठिन है। बहुत से लोग मुझे सुन रहे हैं। निश्चित रूप से यह श्रोताओं के समान लगता है। इसे सुनना और इस पर विश्वास करना कठिन है। काश्, मैं एक छोटी जगह में आपके साथ बैठ सकता और आपकी आँखों में देखकर कह पाता, "आपको चेले बनाने के लिए रचा और उद्धार दिया गया है।"

वह आपके अन्दर बैठ जाए, और मैं आप से सुनूँ, "मैं नहीं जानता। इसका क्या मतलब है?" आप कहते हैं, "मुझे अपने जीवन में बहुत सी बातों को देखना है। मुझे बहुत सी बातों को सही करना है। मैं जानता हूँ कि इसका मतलब शायद दूसरे हो सकते हैं, परन्तु मैं नहीं जानता कि इसका मतलब मैं हूँ।" मैं पूछना चाहता हूँ, "पंजा याद है? वह एक दोहपर में मसीह में आई, और एक सप्ताह बाद, उसके घर में 24 लोग थे, और वह उन्हें सुसमाचार सुनाती है, और उसके एक सप्ताह बाद, उनमें से सात लोग मसीह में आते हैं, और उसके घर में एक नई कलीसिया शुरू होती है। आपको पता है कि कुछ सप्ताहों में एक कलीसिया को शुरू करने के लिए क्या करना पड़ता है?" मैं यह कहना चाहता हूँ ताकि आप विश्वास करें। क्यों न इस पर विश्वास किया जाए? हमारे अन्दर एक ही आत्मा है, एक ही वचन, और एक ही सुसमाचार है। कोई भी, हर एक विश्वासी इसे कर सकता है, और करना चाहिए। इसके लिए परमेश्वर ने अपने आत्मा को हमें दिया है।

अतः, आइए हम वचन को बाँटें ताकि दूसरे इसे ग्रहण करें। यहाँ मैं उसे दोहराना चाहता हूँ जिसके बारे में हम पिछले चार सप्ताहों से बात करते आ रहे हैं, चेले बनाना, वचन को बाँटना। हम सुसमाचार इसलिए सुनाते हैं ताकि दूसरे उसे ग्रहण करें। मैं चाहता हूँ आप इसे देखें। यहीं पर 1 थिस्सलुनीकियों 1 जीवन्त हो

उठता है। यह उन सारी बातों को प्रकाश में लाता है जिनके बारे में हम चेले बनाने के संबंध में बात करते रहे हैं।

शायद आपने चेले बनाने की इस तस्वीर को स्वीकार नहीं किया होगाः वचन को बाँटना, वचन को दिखाना, वचन को सिखाना, और संसार की सेवा करना। 1 थिस्सलुनीकियों 1:5 को देखें। वह कहता है, *"हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास केवल शब्द मात्र में ही नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ और पूर्ण निश्चय के साथ आया।"* यहीं पर यह सब शुरू हुआ, सुसमाचार को बाँटना। आप 1 थिस्सलुनीकियों 2:2 पर आएँ, और पौलुस कहता है, *"वरन् तुम आप ही जानते हो, कि पहले पहल फिलिप्पी में दुख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा हियाव दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएँ।"* हम में तुम्हें सुसमाचार सुनाने का साहस था।

आप 1 थिस्सलुनीकियों 2:9 पर आएँ। पद 9 को देखें, *"क्योंकि, हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो, कि हमने इसलिए रात–दिन काम–धन्धा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया, कि तुम में से किसी पर भार न हों।"* पद 13, *"इसलिए, हम भी निरन्तर परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं; कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण कियाः और वह तुम में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है।"*

तस्वीर यह है। वे सुसमाचार सुनाते हुए आए। हम यही करते हैं। हम सब यही करते हैं। हम सुसमाचार सुनाते हैं। सुसमाचार इसी तरह आगे बढ़ता है, जब हम सब पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ सुसमाचार सुनाते हैं तो वे इसे ग्रहण करेंगे। अब, मैं जानता हूँ कि आपने अपने जीवन में कुछ ऐसे लोगों को सुसमाचार सुनाया होगा जिन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया, परन्तु उसके कारण सुसमाचार पर अपने भरोसे को नष्ट न होने दें। लोग इसे स्वीकार करेंगे। यह सुसमाचार अच्छा है। इसे सुनाएँ; वे इसे ग्रहण करेंगे, इसे हमें हमारे बीच में सबसे आगे और केन्द्र में रखना चाहिए, विशेषतः जब हम संसार की आवश्यक आत्मिक और भौतिक आवश्यकता के बारे में बात करते हैं।

जब हम आवश्यक भौतिक जरूरत के सामने भूख से मर रहे और शारीरिक कष्ट सहने वाले लोगों के लिए अपने आप को सेवकाई में दे देते हैं, तो हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि उन्हें रोटी देते समय हमें उन्हें सुसमाचार को देने की जरूरत है। आप कलीसिया के इतिहास में देखें, वहाँ हमेशा भौतिक जरूरतों को पूरा करने और सुसमाचार को छोड़ देने की प्रवृत्ति रही है। हमें यह ध्यान रखना है कि हम सुसमाचार को छोड़ न दें।

हम इसे पहले कह चुके हैं, कि नरक की ओर जाा रहे लोगों को कपड़े पहनाने से शैतान को कोई परेशानी नहीं है। अतः, हम ऐसा करके पूरे बिन्दू से नहीं चूकना चाहते हैं। इसलिए, आइए हम सुसमाचार सुनाएँ ताकि लोग उसे ग्रहण करें, और आइए हम वचन को दिखाएँ ताकि दूसरे उसका पालन करें। अब, यहाँ पर यह और भी मजेदार हो जाता है। पद 5 के अन्त में वह कहता है, *"जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिए तुम में कैसे बन गए थे। और तुम हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे।"* अतः, "हमने तुम्हारे सामने अपने आप को सुसमाचार को जीने वाले साबित किया, और फिर तुम हमारे पीछे चलने लगे। तुम हमारा अनुकरण करने लगे।"

आप 1 थिस्सलुनीकियों 2:8 पर आएँ, और उसे सुनें। यह एक महान वचन है। 1 थिस्सलुनीकियों 2:8 में पौलुस कहता है, *"और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपना–अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे।"* क्या आप इसे देख रहे हैं? हम सुसमाचार को बाँटते हैं, और हम जीवन को बाँटते हैं। आप दो वचन नीचे आएँ, पद 10 में

लिखा है, *"तुम आप ही गवाह होः और परमेश्वर भी, कि तुम्हारे बीच में जो विश्वास रखते हो हम कैसी पवित्रता और धार्मिकता और निर्दोषता से रहे।"*

पौलुस कह रहा है, "तुमने हमसे सुसमाचार सुना, और तुमने परमेश्वर के वचन को हम में जीवित देखा।" वह अत्यधिक प्रमुख था। यहाँ प्रेरितों के काम 17 में मूर्तिपूजक लोग हैं। मूर्तिपूजक अन्यजातियों के बीच, थिस्सलुनीके में, उन्होंने सुसमाचार नहीं सुना है, और सुसमाचार उनके पास आता है। उन्हें कैसे पता चलेगा कि मसीह के पीछे कैसे चलना है? वे मसीह के बारे में सुनते हैं। वे मसीह पर विश्वास करते हैं। उन्हें कैसे पता चलेगा कि मसीह के पीछे कैसे चलना है? उनको चाहिए था कि पौलुस वचन को दिखाए, पौलुस उस केन्द्र को उनके सामने लाए। मसीही जीवन ऐसा ही होता है। हम यही करते हैं। इसीलिए जब कोई नया व्यक्ति मसीह में आता है तो मैं यह नहीं कहता हूँ, "जल्दी से उस नए मसीही को किसी बाइबल कक्षा में भेजो।" ऐसा नहीं है कि बाइबल कक्षा बुरी है, परन्तु उनको आपके अन्दर सुसमाचार और मसीह के वचन को जीवित रूप में देखने की जरूरत है।

वह नया विश्वासी प्रार्थना करना कैसे सीखेगा? आप उन्हें प्रार्थना के बारे में एक कक्षा में बैठा सकते हैं। वह चलेगा, लेकिन उससे भी मूल्यवान यह होगा कि आप उस नए विश्वासी को अपने शान्त समय में आने के लिए कहें, और दिखाएँ, "हम इस तरह प्रार्थना करते हैं। चलो हम मिलकर प्रार्थना करते हैं, और मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ कि मैं अपना ध्यान कैसे परमेश्वर पर लगाता हूँ, कैसे मैं अपना प्रेम परमेश्वर की ओर उठाता हूँ। मैं प्रभु से इस प्रकार सघन समय व्यतीत करता हूँ, और यह परमेश्वर के साथ मेरे निरन्तर समय को ईंधन देता है।"

वह नया विश्वासी इस वचन को पढ़ना और इसका अध्ययन करना कैसे सीखेगा? उसे किसी कक्षा में बैठाना, या उसे कलीसिया में लाना? ऐसा नहीं है कि यह बुरा है; इसमें कुछ भी गलत नहीं है, परन्तु मेरा विश्वास है कि एक नया विश्वासी वचन को पढ़ना और उसका अध्ययन करना तब सीखेगा जब आप उसे अपने शान्त समय में आने का निमंत्रण देते हैं, आप वचन को निकालते हैं और कहते हैं, "मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ कि मैं परमेश्वर के वचन का अध्ययन कैसे करता हूँ। मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ कि मैं कैसे पढ़ता हूँ। मैं तुम्हें वे सवाल दिखाना चाहता हूँ जिन्हें मैं वचन को समझने के लिए पूछता हूँ।"

इस बिन्दू पर लोग कहते हैं, "मुझे नहीं पता कि मैं इसे कर सकता हूँ या नहीं। मुझे नहीं पता कि मैं ऐसा करने के लिए तैयार होऊँगा।" याद रखें, यहीं पर हमें यह अहसास होता है कि परमेश्वर ने यह सारी योजना केवल दूसरों के शुद्धिकरण के लिए, दूसरों के मसीह में बढ़ने के लिए ही नहीं, परन्तु हमारे स्वयं के शुद्धिकरण और मसीह में हमारी स्वयं की उन्नति के लिए भी बनाई है। यदि आप किसी दूसरे व्यक्ति को सिखाने जा रहे हैं, किसी दूसरे व्यक्ति को दिखाने जा रहे हैं कि बाइबल का अध्ययन कैसे किया जाता है, तो पहले आपको यह पता होना चाहिए कि बाइबल का अध्ययन कैसे किया जाता है।

अब, अचानक आपकी मसीहियत एक ऐसी ऊँचाई तक पहुँचने वाली है, जहाँ तक यह पहले कभी नहीं पहुँची थी क्योंकि दूसरे लोग मसीह में अपनी उन्नति के लिए आप पर निर्भर हैं। "आप मेरे जीवन में शुद्ध करने वाला प्रभाव हैं क्योंकि आप हर सप्ताह मुझे इस वचन में उतरने और प्रार्थना करने के लिए मजबूर करते हैं।" जब आपके जीवन में ऐसे लोग होते हैं जिन्हें आप मसीह के पीछे चलने का तरीका दिखाते हैं, आप मसीह में बढ़ने में उनकी सहायता करते हैं, तो होता यह है, कि वे अनजाने में मसीह के पीछे चलने में आपकी सहायता करने लगते हैं।
मुझे निश्चय है कि यदि हम अपने आप को चेले बनाने के कार्य में नहीं लगाते हैं तो किसी भी जगह के हर एक विश्वासी की आत्मिक उन्नति सीमित हो जाएगी। यदि यह केवल आपके बारे में और मसीह में आपकी स्वयं की उन्नति के बारे में होता, तो आप सीमित हो जाते। परन्तु, जब दूसरे लोग मसीह में अपनी उन्नति के लिए आप पर निर्भर होते हैं, तब आप पूर्णतः नई ऊँचाईयों को छूने लगते हैं, क्योंकि आप अपना

जीवन दूसरों के साथ बाँट रहे हैं और दूसरों को दिखा रहे हैं कि यह कैसा होता है। यहीं पर हमें यह अहसास होता है कि धर्मशास्त्रीय समुदाय और धर्मशास्त्रीय मिशन को अलग नहीं किया जा सकता है।

धर्मशास्त्रीय समुदाय और धर्मशास्त्रीय मिशन को अलग नहीं किया जा सकता है। चेले बनाने के बारे में इस सारी बातचीत के बीच, कुछ लोग सोचने लगते हैं कि हम चेले बनाने के कार्य में इतने व्यस्त हो सकते हैं कि हम एक–दूसरे की चिन्ता नहीं करते हैं। बिल्कुल नहीं, यदि हम बाइबल के आधार पर चेले बना रहे हैं, तब तो बिल्कुल नहीं, क्योंकि बाइबल के आधार पर चेले बनाने का अर्थ है, एक–दूसरे की देखभाल करना। यह एक–दूसरे के साथ समुदाय का अनुभव करना है। यह जीवन को एक–दूसरे के साथ बाँटना है। इसीलिए, जब हम चेले बनाने को सप्ताह में एक बार घण्टे भर की कक्षा तक सीमित कर देते हैं तो हम शुरूआत में पूरी बात से चूक जाते हैं। हमें जीवन को एक–दूसरे के साथ बाँटना है और जीवन में एक साथ मिलकर चलना है। जीवन के सन्दर्भ में, वचन को कार्य में देखें और जब ऐसा होता है तो हम एक साथ समुदाय और मिशन की गहराई का अनुभव करते हैं।

आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलें जो थोड़े समय के लिए मिशन यात्रा पर गया हो, आप उनसे पूछें, क्या वे दूसरे लोगों के साथ मिशन यात्रा पर गए हैं, क्या उस यात्रा के सन्दर्भ में उन्होंने उन दूसरे लोगों के साथ समुदाय का अनुभव किया। वे जवाब देंगे कि उन्होंने इस प्रकार समुदाय का अनुभव किया जैसा वे सोच भी नहीं सकते थे। जब आप एक साथ मिशन में आगे होते हैं, आप अपने चारों ओर के लोगों का हाथ थामते हैं, आपको अपने चारों ओर लोगों की कुछ इस प्रकार जरूरत होती है जैसी आपको तालाब में डुबकी लगाते समय जरूरत नहीं पड़ती है। जब आप मिशन में एक साथ आगे होते हैं, तो आप एक साथ बंकर में हैं। आप को एक–दूसरे की जरूरत है, और यही चेले बनाने की सम्पूर्ण योजना है। धर्मशास्त्रीय समुदाय और धर्मशास्त्रीय मिशन को अलग नहीं किया जा सकता है।

हम भारत में एक पासबान से बात कर रहे थे। वह हमें अपनी कलीसिया के एक युगल के बारे में बता रहे थे। वे विश्वास करने लगे कि, "चेले बनाने वाले हैं।" वे अपनी जान–पहचान के लोगों की एक सूची बनाते हैं जिनके साथ वे सुसमाचार को बाँट सकते हैं, और उनकी सूची में 50 या 60 लोग हैं। वे अपने पासबान के पास वापस आए और उन्होंने कहा, "हमें पता नहीं था कि इसका हमारे विवाह पर क्या असर होगा।" उन्होंने कहा, "जब हम इन लोगों को सुसमाचार सुनाने लगे तो हमें महसूस हुआ कि इन लोगों को हमारे आपसी प्रेम में मसीह के प्रेम को देखने की जरूरत है।"

यही विवाह की सम्पूर्ण योजना है। इफिसियों 5 कहता है कि हमारे विवाह अपनी कलीसिया के प्रति मसीह के प्रेम की तस्वीर होंगे। चेले बनाने की प्रक्रिया में वे एक–दूसरे के प्रति अपने प्रेम की आवश्यकता की नई ऊँचाईयों को छूने लगे। हाँ, एक–दूसरे से प्रेम की खातिर, सुसमाचार के प्रसार की खातिर। जब परमेश्वर हमें चेले बनाने के लिए कहता है तो उसे पता है कि वह क्या कर रहा है। चेले बनाना दूसरों के लिए अच्छा है, और यह हमारे लिए भी अच्छा है। इसके बारे में प्रभु पर भरोसा रखें।

इसलिए, आइए हम दूसरों को वचन दिखाएँ ताकि वे उसका पालन करें। आइए हम वचन सिखाएँ ताकि दूसरे इसे फैलाएँ। पद 6 में, पौलुस कहता है, *"तुमने वचन को ग्रहण किया..."* 1 थिस्सलुनीकियों 1:6 में उसने कहा, *"तुमने वचन को ग्रहण किया,"* और फिर पद 8 को सुनें, *"क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं।"* कितना महान वचन है।
पौलुस कहता है, *"तुम्हारे यहाँ से वचन हर जगह सुनाया गया है।"* कुछ अनुवाद कहते हैं, "वचन विदेश में फैल गया है।" कुछ अनुवाद कहते हैं, "हर जगह, हर कहीं पहुँच गया है।" संसार को उलट–पुलट करने वाली कलीसिया। वचन हर जगह सुनाया गया है। "सुनाने" के लिए वह जिस शब्द का प्रयोग करता है, उसका प्रयोग किसी भी पत्री में केवल एक ही बार किया गया है। यह एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग

उस दिन तुरही के फूँके जाने का वर्णन करने के लिए किया जाएगा ताकि सब लोग उसे सुन सकें। इस शब्द का प्रयोग इसका वर्णन करने के लिए किया जाएगा कि एक गर्जन के साथ आकाश के हटने की आवाज कैसी होगी।

कितनी महान तस्वीर है। हे परमेश्वर, हमारी कलीसिया में भी ऐसा ही हो। तुरही की आवाज के समान यह हर जगह सुनाया जाए। यह कुछ इस प्रकार है जैसे कि थिस्सलुनीकियों के मसीहियों से बातें करते समय पौलुस एक ध्वनि विस्तारक के माध्यम से बात कर रहा हो। वह उन्हें वचन सुनाता है, और वचन को केवल ग्रहण ही नहीं किया जा रहा है, परन्तु उसका पुनः उत्पादन किया जा रहा है। इसलिए पौलुस कहता है, "मुझे कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। मैं चुप रह सकता हूँ। तुमन इन सारे क्षेत्रों को वचन से ढाँप दिया है। तुम वचन को फैला रहे हो।" हम भी यही चाहते हैं। "हे परमेश्वर, काश, हम भी वचन को इसी तरह गूँजा सकते।" आइए हम वचन सिखाएँ ताकि दूसरे लोग उसे फैला सकें।

वचन को बाँटें, दिखाएँ, सिखाएँ, और आइए हम संसार की सेवा करें ताकि दूसरों के साथ मिलकर, हम अन्ततः संसार और जातियों तक सुसमाचार को पहुँचा सकें। "न केवल मकिदुनिया और अखया, परन्तु परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास की चर्चा हर जगह फैल गई है।" थिस्सलुनीके संसार के लिए सेवकाई का केन्द्र था। थिस्सलुनीके में उनके चेले बनाने की गूँज संसार भर के शहरों और प्रान्तों में सुनाई दी। यही इसकी खूबसूरती है। हमारी कोशिश और हमारी प्रार्थना यही है। हम एक कलीसिया के रूप में जो करते हैं उसके साथ वचन और सुसमाचार की गूँज हर जगह सुनाई देगी। अतः, हम चेले बनाने के लिए जीते हैं। कलीसिया जब चेले बनाती है, तो यही होता है।

आपको चेले बनाने के लिए उद्धार दिया गया है। परमेश्वर इस बात को आप में से प्रत्येक के दिल में बैठा दे। हम में से प्रत्येक के जीवन में वचन को बाँटने, वचन को दिखाने, वचन को सिखाने, और संसार की सेवा करने का क्या असर होता है। अब, यहीं पर हम इसके व्यवहारिक भाग में प्रवेश करते हैं। आप में से कुछ लोग सोच रहे हैं, "ठीक है, लेकिन एक–दूसरे के साथ इसमें उतरना कैसा लगता है। एक छोटे समूह के लिए उसमें उतरना और यह कहना कैसा लगता है कि, "हम जहाँ रहते हैं, वहाँ इसे हमारे जीवनों में सर्वोत्तम रीति से कैसे कर सकते हैं?"

परमेश्वर आप से भी अधिक चाहता है कि यह मिशन आपके जीवन में पूरा हो। वह आपकी अगुवाई करेगा और उसे व्यवहार में ढ़ालने के लिए आपको मार्गदर्शन देगा। हम उसमें लगे हैं। मैं सुसमाचार को सर्वोत्तम रूप से कैसे बाँट सकता हूँ? मैं सुसमाचार को सर्वोत्तम रूप से कैसे दिखा सकता हूँ? मैं दूसरों को वचन कैसे सिखा सकता हूँ? हम संसार की सेवा करने, जातियों तक सुसमाचार को पहुँचाने के लिए कन्धे से कन्धा कैसे मिला सकते हैं? जब ऐसा होने लगता है तो फिर हम दर्शक नहीं रहते हैं।

अब, यह एक और आधार की ओर लाता है, जो प्रेरितों के काम के अध्ययन के दौरान मेरे लिए सर्वाधिक चुनौतिपूर्ण और कायल करने वाला आधार रहा है।

हम कलीसियाओं को बढ़ाने के लिए मरते हैं।

हमारा अस्तित्व परमेश्वर की महिमा करने के लिए है, जो हमें चेले बनाने के लिए जीने की ओर लाता है। तीसरा आधार है, हम कलीसियाओं को बढ़ाने के लिए मरते हैं। आप पूछेंगे, "इसका क्या मतलब है?"

इससे मेरा मतलब यह है। आपको याद होगा, प्रेरितों के काम की श्रंखला को शुरू करते समय हमने कहा था कि, "आइए हम कल्पना करें कि हम एक कोरे कागज के समान हैं। केवल लोग, कोई भवन नहीं, कोई कार्यक्रम नहीं, केवल लोग, परमेश्वर के लोग जिनमें परमेश्वर का आत्मा है, और परमेश्वर का वचन हमारे सामने है, और हमें इस सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक पहुँचाने की आज्ञा दी गई है। इसे करने के लिए

हमारे पास थोड़ा सा समय है, अनन्त काल के आने से पहले केवल थोड़ा सा समय, कि हम सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक पहुँचा सकें। यदि हमारे पास एक खाली चैक, एक खाली स्लेट होती, और हमारे पास केवल लोग, परमेश्वर का वचन, और परमेश्वर का आत्मा होता, तो हम सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक कैसे पहुँचाते?"

हमने यह सवाल पूछा था, "क्या हम हमारे संसाधनों पुनः एकत्रित करके करोड़ों डॉलर भवनों पर खर्च करेंगे?" हमने पूछा था, "क्या हम उन सारे कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे जो हमारे लिए अत्यधिक परिचित हैं, और जो अधिकाँशतः हम पर ही केन्द्रित हैं? क्या हम यह सब करेंगे? क्या यह हमारी प्राथमिकता होगी?" हमने कहा, "नहीं, शायद नहीं।" हम एक साथ बिखर जाएँगे। हमें एक–दूसरे की जरूरत होगी। हम हमारे शहर भर में फैलेंगे और पृथ्वी की छोर तक इस वचन को फैलाएँगे।"

यदि हमारा जीवन ऐसा होता और हमारे पास एक खाली चैक होता, तो हम क्या करते? हमने यह सवाल पूछा था। हमने कहा, "इसका मतलब यह नहीं है कि भवन, कार्यक्रम, वस्तुएँ, और ये सारी दूसरी बातें बुरी हैं, लेकिन हमें अपने ध्यान को पुनः केन्द्रित करने और इस सवाल को पूछने की जरूरत है। हमें सवाल पूछना है।" अब, मैं इसे वापस लाना चाहता हूँ, इसलिए नहीं कि मेज पर बहुत से उत्तर हैं, परन्तु मैं इसे वापस खाली चैक की ओर लाना चाहता हूँ।

एक कलीसिया के रूप में एक खाली चैक लेकर प्रभु के सामने हम कह रहे हैं, "हे परमेश्वर, हम हमारे आराम के लिए मर जाएँगे। हम हमारी प्राथमिकताओं के लिए मर जाएँगे। हम परम्पराओं के लिए मर जाएँगे। अब तक सब कुछ जैसे होता रहा है और हम जैसे सब कुछ होते हुए देखना चाहते हैं, उसके लिए हम मर जाएँगे। हम उन सारी बातों के लिए मरने जा रहे हैं। हम इस सुसमाचार को हमारे शहर और पृथ्वी की छोर तक सर्वाधिक प्रभावी रूप से कैसे फैला सकते हैं? आप जो कहेंगे, हम वही करेंगे। आप हमें जो कुछ त्यागने के लिए कहेंगे, वह हम त्याग देंगे। आप हमें जो कुछ अलग तरीके से करने के लिए कहेंगे, हम उसे अलग तरीके से करेंगे। ये रहा खाली चैक जिसके साथ कोई शर्त नहीं जुड़ी है, और आप हमें बताएँ कि हमें क्या करना है।"

यहीं पर हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक में डुबकी लगाई थी। अब, पन्द्रह सप्ताह बाद, हम कहाँ हैं? हम किन निष्कर्षों पर पहुँचे हैं? आज सुबह मैं आपके सामने बताना चाहता हूँ कि मेरे विचार से प्रेरितों के काम ने हमें उसके लिए सटीक उत्तर नहीं दिए हैं। मुझे नहींग लगता कि कोई ऐसा रास्ता है जहाँ आप कह सकें, "बस इन्हें करो, इन जगहों पर निशान लगाओ, और हम पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार फैलाने लग जाएँगे।"

परन्तु, मैं आपके सामने चार बातों को रखना चाहता हूँ जो मेरे विचार से प्रेरितों के काम का योगदान हैं। पुनः, मेरे पास ऐसी कोई योजना नहीं है कि हमारे लिए आगे बढ़ने का क्या मतलब है। मैं चाहता हूँ यह आपके अन्दर बैठ जाए और यहाँ से आगे यही हमारी प्रार्थना को प्रेरित करे। वे चार बातें ये हैं जिनके बारे में मैं बताना चाहता हूँ। पहली, प्रेरितों के काम में इन आरम्भिक मसीहियों के बारे में, <u>उनके घर केन्द्रिय थे।</u> इन आरम्भिक मसीहियों के लिए एकत्रित होने का सामान्य स्थान उनका घर था।

अब, यरूशलेम में ऐसे विश्वासी थे जो मन्दिर में मिलते थे, विशेष रूप से प्रार्थना के समय पर, परन्तु सताव के बढ़ने के साथ, इसकी संभावना कम होती गई। निश्चित रूप से, वे दूसरे नगरों के आराधनालयों में जाते थे, लेकिन अधिक समय नहीं बीतता था कि पौलुस को आराधनालय से निकाल दिया जाता था। अतः, आराधनालय भी एकत्रित होने के लिए सर्वोत्तम स्थान नहीं थे।

कई बार आप उन्हें सार्वजनिक भवनों में एकत्रित होते हुए देखते हैं, जैसे प्रेरितों के काम 19 में तुरन्नुस की पाठशाला में, और इसी प्रकार के कुछ और स्थानों में, परन्तु शुरूआत से ही और शेष नये नियम में आप देखते हैं कि घर मसीहियों के लिए एकत्रित होने के केन्द्रिय स्थान थे। प्रेरितों के काम 1 की शुरूआत में ही वे यूहन्ना और मरकुस की माता मरियम के घर में ऊपरी कोठरी में एक साथ एकत्रित थे। प्रेरितों के काम 2 में कलीसिया बढ़ती है। पद 46 कहता है वे घर–घर मिलते थे। फिर, आप आगे बढ़ते हैं और प्रेरितों के काम और पत्रियों में आप इन अलग–अलग घरों को देखते हैं। उनकी सूची बनाएँः कैसरिया में फिलिप्पुस का घर, फिलेमोन का घर, थिस्सलुनीके में यासोन का घर जिसे हमने अभी पढ़ा है, तीतुस का घर, स्तिफनास का घर, लुदिया का घर, फिलिप्पी दारोगा का घर, निम्फा, अक्विला और प्रिस्किल्ला, ये सारे घर मसीहियों के लिए एकत्रित होने के रणनीतिक केन्द्र थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमने पढ़ा है और आप एक भी कलीसियाई भवन को नहीं देखते हैं।

यह इस प्रश्न को उठाता है, क्यों नहीं? ईमानदारी से कहें तो हमारे पास इस प्रश्न का उत्तर नहीं है। हम नहीं जानते क्यों नहीं। कुछ लोगों का कहना है, "इसका कारण यह है कि उनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे।" स्पष्ट है, कि कलीसिया के पास कुछ संसाधन थे, कलीसिया के कुछ सदस्य धनी थे, लेकिन शायद उनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे। शायद कुछ स्थानों पर, सताव के कारण यह संभव नहीं था। लेकिन, ऐसे स्थान भी थे जो मसीहियों के लिए मित्रवत् थे, और वहाँ भी कोई भवन नहीं थे।

अतः, हम निश्चित तौर पर नहीं जानते हैं, परन्तु यह आपको सोचने पर मजबूर करता है। मैं सोचता हूँ कि उन्होंने इसे जरूरी नहीं समझा। जैसे हम इस पुस्तक में देखते हैं, एक ऐसे सुसमाचार को देखना जो निरन्तर बढ़ता जा रहा है कि उन्होंने कभी सोचा ही नहीं एक भवन को बनाना आवश्यक होगा, और वे उनके बिना भी जी सकते थे। अपनी जान–पहचान के लोगों के साथ सुसमाचार को बाँटने, परिवार के रूप में एक–दूसरे को सुसमाचार दिखाने, संबंधों के सन्दर्भ में वचन को सिखाने के लिए घर से बढ़कर स्वाभाविक स्थान और क्या हो सकता था? अतः, उनके घर केन्द्रिय थे।

दूसरी बात, उनकी रणनीति सरल थी। अब, सरल से मेरा मतलब आसान नहीं है। हम एक पल में उस पर आएँगे, परन्तु मैं चाहता हूँ आप इसके बारे में सोचें। प्रेरितों के काम 14 में, पौलुस और बरनबास चेले बना रहे हैं, और फिर वे उन चेलों को एक कलीसिया का रूप देते हैं, और फिर वे पुरनियों, पासबानों को नियुक्त करते हैं, और फिर वे चले जाते हैं, और वे अपने पीछे केवल चेलों, पासबानों, और परमेश्वर के वचन को छोड़कर जाते हैं, हालांकि उनके पास हमारी तरह पूर्ण वचन नहीं था। उनके पास पुराना नियम था, और प्रेरितों की शिक्षा थी। उनके पास पूर्ण नया नियम नहीं था। इसके संबंध में हम पौलुस और इन आरम्भिक कलीसियाओं से फायदे की स्थिति में हैं, और वे चले जाते हैं।

दस सालों तक, पौलुस अलग–अलग जगहों पर यही करते हुए घूमता है; चेले बनाना, कलीसियाओं की स्थापना, पासबानों की नियुक्ति और फिर वह चला जाता है। वह दस वर्ष तक ऐसा करता है, और दस वर्ष बाद, रोमियों के अन्त में वह कहता है, "यहाँ का मेरा कार्य पूरा हो गया है।" उसने केवल इतना ही किया था। वे अपने पीछे लोगों, पासबानों, परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के आत्मा को छोड़ गया। सरल से मेरा मतलब यही है।

रोलैण्ड एलन, बीसवीं सदी के आरम्भ में अपने बचपन में ही अनाथ हो गया था। वह मिशनरी के रूप में इंग्लैण्ड से उत्तरी चीन में गया और दो पुस्तकें लिखने लगा जिन्होंने वास्तव में मिशन परिदृश्य को हिला दिया। एक बात जो उसने कही, वह थी,

> हम उन विस्तृत संसाधनों के बिना मसीहियत के अस्तित्व की कल्पना नहीं कर सकते हैं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस अपनी नई स्थापित कलीसियाओं को सुसमाचार

शिक्षा की सरल पद्धति, दो संस्कारों, अर्थात्, प्रभु भोज और बपतिस्मा, मृत्यु और पुनरूत्थान के मुख्य तथ्य की एक परम्परा और पुराने नियम के भरोसे छोड़ दिया था।

बस इतना ही। यह हमें बहुत थोड़ा प्रतीत होता है। हमारे लिए यह विश्वास करना कठिन है कि एक कलीसिया की स्थापना इतने छोटे आधार पर की जा सकती है। हम बहुत अधिक जोड़ते हैं, लेकिन क्या हमें इतने ज्यादा की जरूरत है यदि हमारा लक्ष्य तेजी से सुसमाचार को फैलाना है? हम चाहते हैं कि हमारे शहर और पृथ्वी की छोर तक हजारों–हजार लोग सुसमाचार को जानें। स्पष्टतः, हम इस सम्पूर्ण तस्वीर को यहाँ तीव्रता से पुनः उत्पादित नहीं कर सकते हैं, लेकिन क्या हमें इसकी जरूरत है? स्पष्ट है, कि पौलुस के लिए पासबान, लोग, वचन, और आत्मा काफी है। उन आरम्भिक मसीहियों के लिए इतना पर्याप्त था। संसार में हमारे बहुत से भाइयों और बहनों के लिए यह पर्याप्त है। लेकिन सवाल यह है, "क्या हमारे लिए यह पर्याप्त है?"

आप शेष सारी बातों को दूर कर दें; क्या पासबान, लोग, वचन, और आत्मा हमारे लिए पर्याप्त हैं? उसकी रणनीति सरल थी। परन्तु, यह आसान नहीं थी, क्योंकि, तीसरी बात, उनकी कीमत बहुत बड़ी थी। यहाँ हम स्पष्टीकरणों में जा सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि इस पुस्तक के शुरू से अन्त तक यह स्पष्ट है कि मसीह के इन आरम्भिक अनुयायियों के लिए सताव और कष्ट बहुत अधिक थे। यह सुरक्षा और आराम का मार्ग नहीं था। यह कष्ट और कीमत का मार्ग था।

उन्होंने शुरूआत से ही यह नहीं पूछा, "मेरे लिए सर्वोत्तम क्या है, और आओ हम उसके आधार पर संगठित करते हैं।" उनका पहला सवाल था, "सुसमाचार के प्रसार के लिए सर्वोत्तम क्या है?" उनका मानना था कि वही उनके लिए सर्वोत्तम था। यही मुख्य बात है। उन्होंने इसके साथ शुरूआत नहीं की, "मेरे लिए सर्वोत्तम क्या है?" उन्होंने इसके साथ शुरूआत की, "सुसमाचार के प्रसार के लिए सर्वोत्तम क्या है," और उनका विश्वास था कि वही उनके सर्वोत्तम था क्योंकि उनका मानना था कि यह परमेश्वर की महिमा के लिए सर्वोत्तम था। हमारे लिए वही सर्वोत्तम है जिससे परमेश्वर की महिमा होती है।

अतः, यह महंगा था। आप प्रेरितों के काम 20:24 में पौलुस को कहते हुए सुनते हैं, *"परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझताः कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरा करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पाई है।"* मेरा जीवन मेरे लिए कुछ नहीं है। इसका महत्व केवल एक बात के लिए है, और वह है, परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देना। कीमत बहुत अधिक थी, लेकिन उनका प्रतिफल महान था।

यह अन्तिम स्थान है जो मैं आपको दिखाना चाहता हूँ। 1 थिस्सलुनीकियों 2:19, हम इसे पहले पढ़ चुके हैं। मैं 1 थिस्सलुनीकियों 2:19 को वापस यहाँ लाना चाहता हूँ। आइए हम इसे सुनते हैं। पौलुस ने कष्ट सहा। पौलुस को पीटा गया, बन्दीगृह में डाला गया, और जहाज टूट गया। वह थिस्सलुनीके में गया और वहाँ भी उसका सताव सहना पड़ा। विभिन्न स्थानों पर उसे पत्थरवाह किया गया। उसने कष्ट सहा। ऐसी क्या बात थी, पौलुस? 1 थिस्सलुनीकियों 2:19 को सुनें, वह कहता है, *"भला हमारी आशा, या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे?"*

क्या आपने इसे सुना? "तेरा आनन्द क्या है, पौलुस? बात क्या है?" पौलुस कहता है, "मसीह के आगमन पर उसके सामने बड़ाई का मुकुट लोग हैं।" कष्ट के फलस्वरूप लोगों ने मसीह पर विश्वास किया। लोग मसीह में आए हैं। वे मसीह के साथ चल रहे हैं। आप आगे 1 थिस्सलुनीकियों 3:6 में आते हैं, वहाँ लिखा है, *"पर अभी तिमुथियुस ने जिसने तुम्हारे पास से हमारे यहाँ आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का समाचार सुनाया और इस बात को भी सुनाया, कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो, और हमें देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की लालसा रखते हैं। इसलिए, हे भाइयो,"* इसे सुनें, *"हमने*

अपनी सारी सकेती और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई।" "अपने सारे क्लेश में हमने शान्ति पाई।" क्यों? आठवाँ पद, *"क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर हो तो हम जीवित हैं।"* जब वह दूसरों को मसीह में स्थिर देखता था तो जीवन पाता था।

मेरी प्रार्थना है कि यही हमारे जीवन को प्रेरित करे। आप देखते हैं कि यह आपके बच्चों का जीवन है। यदि आप एक अभिभावक हैं, आप अपने बच्चों के जीवनों को देखते हैं, और जब आप अपने बच्चों को उन्नति के शिखर की ओर बढ़ते हुए देखते हैं, तो आप उसी को देखने के लिए जीते हैं। जब आप अपने शहर में लोगों को मसीह में आते देखते हैं और मसीह के साथ चलते हुए देखते हैं, यही जीवन है। जब आप देशों में लोगों को मसीह में आते हुए और मसीह के साथ चलते हुए देखते हैं, तो हम यही देखने के लिए जीते हैं। जब वे प्रभु में स्थिर होते हैं और प्रभु के साथ चलते हैं तो हम जीवित होते हैं। कष्ट चाहे कैसा भी हो; यह उसके योग्य है।

अतः, इस तस्वीर के आधार पर, घर केन्द्रिय है; रणनीति सरल है; कीमत बहुत अधिक है; प्रतिफल महान है। प्रेरितों के काम के आधार पर, मैं कहूँगा; यहाँ पर कोई विशिष्टता नहीं है। यह सामान्य है, परन्तु मैं यह कहूँगा। पहले, आओ हम हर जगह चलें। कलीसिया, प्रेरितों के काम की पुस्तक से बाहर निकलकर, आओ हम विदेशों में सुसमाचार से वंचित स्थानोंः पूर्वी एशिया, उत्तरी अफ्रीका, और मध्य एशिया में जाने का निर्णय लें। आओ चलें। उन स्थानों पर चलें जहाँ सुसमाचार बहुत कम पहुँचा है। आओ चलें। महानगरों में चलें। इस शहर भर में लोग हैं। हम इस शहर में हजारों लोगों को मसीह में आते हुए देखना चाहते हैं। इसलिए, आओ हम हर जगह चलें।

हर एक को शामिल करें। यह सोचने की बात है। जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ते हैं, तो मेरे विचार से आपको यह अहसास होने लगता है कि परमेश्वर की योजना है कि हम सब कलीसिया की स्थापना के एक भाग बनें, और हम सब कलीसिया की वृद्धि के एक भाग बनें। इसका तभी मतलब होगा यदि हम सब चेले बनाने में शामिल हैं, तो हम सब स्वतः ही कलीसियाओं की वृद्धि में शामिल होंगे।

आप इसके बारे में सोचें। यदि हम सब अगले एक या दो या तीन साल चेले बनाते हैं, तो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसका सुसमाचार कार्य करता है। लोग मसीह में आते हैं। यदि हम सब चेले बनाते हैं, तो एक या दो या तीन साल में हम दोगुने हो जाएँगे। शायद मैं इसे कम करके आँक रहा हूँ। शायद, मैं नहीं जानता।

यदि हम सारे लोग वह करते हैं जिसके बारे में हम बात करते आ रहे हैं, तो हम दोगुने हो जाएँगे। यह अच्छा है। हम यही चाहते हैं। शायद यह भी एक कारण है कि प्रेरितों के काम में उनके पास कोई भवन नहीं था। शायद यह केवल भण्डारीपन या संसाधन का मामला नहीं था। शायद इसका कारण यह था कि जो हो रहा था वह एक भवन में नहीं समा सकता था। यही हम चाहते हैं। हम कुछ बनाना नहीं चाहते हैं, हम अपने आप को किसी ऐसे कार्य में नहीं लगाना चाहते हैं जो किसी भवन में समा सके। हम अपने आप को किसी ऐसे कार्य में लगाना चाहते हैं जिसे रोका नहीं जा सकता। यहाँ की सम्पूर्ण तस्वीर यही है।

अतः, यदि हम सब चेले बना रहे हैं, यदि हम सब यह कर रहे हैं, तो यथार्थ यह है कि हम अपने वर्तमान भवनों में नहीं समा सकेंगे। कलीसिया शहर भर में फैल जाएगी। हम यही चाहते हैं। आपके मसीही जीवन का लक्ष्य क्या है? यदि आपके मसीही जीवन का लक्ष्य अगले 30 वर्षों तक एक ही कलीसियाई भवन में उन्हीं कार्यक्रमों से घिरे रहना न हो, तो क्या होगा? यदि आपके मसीही जीवन का लक्ष्य अगले पाँच वर्षों तक उसी कलीसियाई भवन में उन्हीं कार्यक्रमों से घिरे रहना न हो, तो क्या होगा? यदि आपके मसीही जीवन का लक्ष्य चेले बनाने और कलीसियाओं की वृद्धि और कलीसिया के विस्तार का भाग बनना हो, और तालाब के समान एक जगह रहने की बजाय, नदी के समान हर जगह जाने का भाग बनना हो तो?

हम केवल कलीसिया स्थापक या कलीसिया खोजने वाले निवासी नहीं हैं, परन्तु हम सब कलीसिया की वृद्धि में शामिल हैं। "हे परमेश्वर, हमें वस्तुओं और सुविधाओं और प्राथमिकताओं और परम्पराओं की हमारी आवश्यकता के लिए मरने का अनुग्रह दे। हे परमेश्वर, हमें यह कहने का अनुग्रह दे, 'ठीक है, इस यात्रा के बाद, ये रहा मेरा खाली चैक। प्रभु, आप जो कुछ चाहते हैं, हम वही करेंगे।'" आइए हम प्रार्थना करें और एक साथ मिलकर प्रार्थना करें और पूछें, "परमेश्वर, आप हमसे क्या करवाना चाहते हैं? हम इस सुसमाचार को हमारे शहर और पृथ्वी की छोर तक तीव्रता और सर्वाधिक प्रभावशाली तरीके से कैसे फैला सकते हैं?" आइए हम परमेश्वर से पूछें, और जो कुछ वह कहता है उसे करने की इच्छा के साथ उससे पूछें।

अन्तिम बात...

परमेश्वर महान आज्ञा के ऊपर सर्वोपरि है।
अन्तिम बात यह है कि परमेश्वर महान आज्ञा के ऊपर सर्वोपरि है। वह इसे पूरा करेगा। वह इसे पूरा करवा लेगा।

हम महान आज्ञा के लिए उत्तरदायी हैं।
हम महान आज्ञा के लिए उत्तरदायी हैं। उसने इसे हमें, आपको और मुझे सौंपा है। अतः, आइए हम अपने जीवनों के साथ उसे एक खाली चैक दें। अपने जीवन और अपने परिवार के साथ, बिना किसी शर्त के, परमेश्वर को दैनिक आधार पर यह कहने का एक खाली चैक दें, "परमेश्वर आप जैसे भी चाहते हैं मेरा उपयोग करें, मेरी और मेरे परिवार की अगुवाई करें, मैं जाऊँगा। जो भी हो, मैं करूँगा। ये रहा खाली चैक।"

आइए हम अपनी कलीसिया के साथ उसे एक खाली चैक दें। आने वाले दिनों में हम कहें, "जो भी हो, हम करेंगे, चाहे यह पागलपन प्रतीत हो, लेकिन हम करेंगे। अपनी साँस से भी बढ़कर हम चाहते हैं कि यह सुसमाचार हमारे द्वारा फैले, और जो भी हो, हम करेंगे।" आइए हम अपना जीवन इस मिशन को पूरा करने में लगा दें।

> संसार में सुसमाचार का प्रचार... यह परमेश्वर मसीही के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित एक लक्ष्य है। यह न केवल प्राप्य है; परन्तु अपरिहार्य भी है। चाहे हम विश्वास करें या नहीं, एक दिन राज्य का सुसमाचार पृथ्वी की छोर तक सुना जाएगा। (मत्ती 24:14) ब्रह्माण्ड का परमेश्वर अपने उद्देश्य में पराजित नहीं होगा। कोई भी गतिविधि जो मानवीय नियति में उसकी योजना को अनुरूप नहीं है, वह एक बेकार की कसरत है। जितनी जल्दी हम इसे महसूस करके अपने मार्गों को उसके मार्गों के अनुरूप बना लेते हैं, उतनी ही जल्दी हम अनन्तकाल के लिए प्रासंगिक बन जाएँगे।

मैं चाहता हूँ कि मेरा जीवन, और हम चाहते हैं कि हमारी कलीसिया अनन्तकाल के लिए प्रासंगिक बने।

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net